(अंधे की धन्यता)

तकाषि शिवशंकर पिल्लै

मलयालम के सुप्रसिद्ध लेखक तकाषि शिवशंकर पिल्लै द्वारा लिखित कहानी 'अन्धे की धन्यता' मानवता एवं प्रेम के उजले पक्ष को हमारे सामने प्रस्तुत करती है। लेखक ने कहानी के नायक 'पप्पु नायर' के माध्यम से जीवन के प्रति आस्था और विश्वास से भरा सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। 'पप्पु नायर गरीबी और अभावों के बीच भी अपनी सच्चाई और आस्था के प्रकाश को लुप्त नहीं होने देता।

कहानी में पप्पु नायर आर्थिक विपन्नता के वातावरण में बढ़ता है और इसी के साथ वह जन्मप्रदत्त नेत्रहीनता भी है ऐसी विकट स्थिति में वह कहीं भी जीवन के पथ पर डगमगाता नहीं है। उसमें एक धैर्य की ज्योति है जो जिसके सहारे वह सर्वत्र प्रेम बाँटता है। लेकिन कहानी यहीं समाप्त नहीं हो होती पप्पु नायर समाज की उस त्याज्य स्त्री को अपनाता है जिसे समाज चरित्रहीन घोषित कर चुका है। भार्गवी को पप्पु अपनी माँ के विरोध करने पर भी त्यागता नहीं है अपितु उसे अपनी जीवनसाथी के रूप में स्वीकार करता है। भार्गवी जिसके पास पप्पु के लिए न तो करुणा है और न ही प्रेम वह पप्पु को केवल इसलिए स्वीकार करती है कि वह समाज में बनी रह सके।

Scanned by TapScanner

अंधे की धन्यता (2)

भार्गवी का उपेक्षापूर्ण व्यवहार पप्पु की समझ से परे नहीं हैं। पप्पु भार्गवी के मन को समझता है और उसके द्वारा दी गयी उपेक्षा को भी प्रेम से स्वीकार करता हैं। पप्पु भार्गवी के उन बच्चों को अपना नाम देता हैं जिन पर उसका कोई अधिकार नहीं, वह भार्गवी के बच्चों को पितातुल्य स्नेह देता हैं और उन्हें पालने की एक भला मनुष्य बनाने की ललक उसके मन में हैं। वही बच्चे पप्पु का निरादर करते हैं।

अपने प्रति दिन पर दिन भार्गवी की बढ़ती हुई उपेक्षा को भी वह पहचानता हैं। उसकी पत्नी और बच्चे को लेकर होने वाली समाज की चर्चाओं से भी वह परिचित हैं। इतना सब होने हुए भी पप्पु नायर जैसी भार्गवी जैसी औरत की विवशता, उसके लांछन और अपमान के वास्तविक कारण को समझ कर भार्गवी को पूरा-पूरा नैतिक और मानसिक सहयोग प्रदान करता हैं। वह अकेला ही जिंदगी की सारी करुण त्रासदी को झेलता हैं। वह शहीदी मुद्रा में अपने आपको भार्गवी और बच्चों के लिए समर्पित करते हुए भी एक आम आदमी के समान सामाजिक दायित्वों को निभाते हुए पति और पत्नी होने का अहसास करना चाहता हैं।

Scanned by TapScanner

'स्वतंत्रता का पल्लु' और
'पत्रः परलि सु. नेल्लैयप्पर पिल्लै को'
- सुब्रह्मण्य भारती

स्वतंत्रता का पल्लु :- यह एक कविता है जिसमें लेखक ~~स्वतंत्रता~~ स्वतंत्रता का उज्ज्वल रूप प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। 'पल्लु' एक दलित जाति है और आजादी को 'पल्लु' जाति के लोग किस तरह देखते हैं उनकी आजादी से क्या-क्या कामनाएँ जुड़ी हैं उसको लेखक ने व्यक्त करने का प्रयास किया है। लेखक इस कविता में एक नए युग की कल्पना करता है जहाँ कोई गुलाम नहीं होगा किसी पर अत्याचार नहीं किया जाएगा और लोग कर्मठ होंगे। आजादी के असली अर्थ की कल्पना लेखक द्वारा की गयी है जिसमें दलित को जाति के कारण अपमानित नहीं किया जाना जहाँ किसी दलित को ब्राह्मणों का डर नहीं रहेगा, जहाँ कोई अंग्रेजों का गुलाम बनकर नहीं जिएगा। आजादी सभी लोगों के लिए एक उम्मीद की तरह है वह चाहे जिस भी वर्ग और जाति से संबंधित हों। आजादी की कल्पना के माध्यम से लेखक कई तरह के प्रश्न भी उठा देते हैं कि समाज के ही लोग आपस में एक-दूसरे को ठगना क्यों चाहते हैं, हर व्यक्ति धोखेबाज़ क्यों नजर आता है, कालाबाजारी, घूसखोरी और राजनीतिक भ्रष्टाचार आजादी के सही अर्थों को समाप्त कर देता है यदि ये सब समाप्त हो जाए और लोगों में समानता का भाव हो वही असली आजादी है।

Scanned by TapScanner

पत्रः परलि सु. नॅल्लैयप्प पिल्लै को

यह सुब्रह्मण्य भारती जी का स्वयं पत्र है नॅल्लैयप्प पिल्लै को, लेखक इस पत्र के माध्यम से अपने तमिल भाषा और साहित्य के प्रति प्रेम को दर्शाता है सुब्रह्मण्य जी कहते हैं कि किसी भी समाज का विकास उसके साहित्य उसके शास्त्र और विज्ञान एवं तकनीक के माध्यम से होता है। इस विकास के लिए लेखक आवश्यक मानता है कि अपने साहित्य समाज और परंपरा के ज्ञान के साथ तमिल के लेखकों विचारकों के लिए यह जरूरी है कि वे दूसरी भाषाओं के साहित्य और विचारकों से नई चीजें भी ग्रहण करें और अपने लोगों तक उन्हें पहुँचाएँ और अपनी भाषा का विकास करें उसे सभी तरह के ज्ञान से भरपूर करें ताकी तमिल साहित्य तमिल समाज और तमिल भाषा का भरपूर विकास हो सके। इस पत्र में लेखक अपनी जाति (संपूर्ण तमिलभाषी लोग) और भाषा के उत्थान में लेखक अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य से भी प्रेरणा प्राप्त करने को प्रोत्साहित करता है।

Scanned by TapScanner

काबुलीवाला

रवीन्द्रनाथ टैगोर

काबुलीवाला रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित कहानी है। कहानी काबुल के एक पश्तून व्यापारी की कथा कहती है जो काबुल से कलकत्ता अपना व्यापार करने आता है। व्यापारी का नाम अब्दुर रहमान है, वह एक विक्रेता के रूप में काम करता है। यह कहानी काबुलीवाले और छोटी बच्ची मिनी के आसपास घूमती है। काबुलीवाला एक पठान है और मिनी एक परिवार से हिन्दू परिवार से संबंधित है। दोनों के मध्य उत्पन्न स्नेह में धर्म की दीवार का नामोनिशान नहीं है। काबुलीवाला मिनी से ही अपनी पुत्री के स्नेह की पूर्ति करता है। मिनी के लिए वह एक ऐसा मित्र है, जो उसकी सारी बातों को सहर्ष सुनता है। दोनों के बीच एक अदृश्य घनिष्ट संबंध है। एक अपराधवश काबुलीवाले को जेल जाना पड़ता है। जब वह लंबी सज़ा भुगतकर आता है, तो मिनी बड़ी हो चुकी होती है।

काबुलीवाला जब लौटता है तो उसके लिए मिनी वही छोटी मिनी है परन्तु मिनी के मस्तिष्क से उसका नाम तक मिट जाता है। काबुलीवाले के लिए यह स्थिति दुखदायी है। टैगोर जी ने दोनों के हृदय को बहुत सुंदर रूप में अभिव्यक्त किया है। यह कहानी प्रेम और भाईचारे के संदेश को प्रसारित करती है। धर्म के नाम पर चिल्लाने वालों का यहाँ नाम तक नहीं है।

Scanned by TapScanner